विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

वर्ग-नवम्

विषय-हिन्दी

।। अभ्यास-सामग्री ।।

आज आपको अभ्यास के लिए 'सांवले सपनों की याद' पाठ से संबंधित गद्यांश आधारित कुछ प्रश्न किए जा रहे हैं जिनका उत्तर आप

अपनी भाषा में लिखेंगे –

साँवले सपनों की याद (जाबिर हुसैन)

1. **निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

   एकांत क्षणों में सालिम अली बिना दूरबीन भी देखे गए हैं। दूर क्षितिज तक फैली ज़मीन और झुके आसमान को छूने वाली उनकी नज़रों में कुछ-कुछ वैसा ही जादू था, जो प्रकृति को अपने घेरे में बाँध लेता है। सालिम अली उन लोगों में थे जो प्रकृति के प्रभाव में आने की बजाए प्रकृति को अपने प्रभाव में लाने के कायल होते हैं। उनके लिए प्रकृति में हर तरफ़ एक हँसती-खेलती रहस्य भरी दुनिया पसरी थी। यह दुनिया उन्होंने बड़ी मेहनत से अपने लिए गढ़ी थी। इसके गढ़ने में उनकी जीवन-साथी तहमीना ने काफ़ी मदद पहुँचाई थी। तहमीना स्कूल के दिनों में उनकी सहपाठी रही थीं।

   i. सालिम अली दूरबीन का प्रयोग क्यों करते थे? उनकी नज़रों की विशेषता क्या थी? (2)

   ii. तहमीना कौन थीं? उन्होंने सालिम अली की मदद कैसे की? (2)

   iii. गद्यांश के आधार पर सालिम अली की दो विशेषताएँ लिखिए। (1)

2. सालिम अली और डी. एच. लॉरेंस में क्या समानता थी?

3. यमुना नदी का साँवला पानी कृष्ण से जुड़ी किन घटनाओं की याद दिला देता है?

4. "साँवले सपनों की याद" में लेखक मनुष्य की किस क्रियाकलाप को उसकी भूल बताता है?

4. “साँवले सपनों की याद” में लेखक मनुष्य की किस क्रियाकलाप को उसकी भूल बताता है?

5. लॉरेंस की पत्नी फ्रीडा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि “मेरी छत पर बैठने वाली गौरैया लॉरेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है?”

6. लॉरेंस के बारे में कौन अधिक जानता था? इससे उनके किस गुण का पता चलता है?

लिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. सुनहरे परिंदों के खूबसूरत पंखों पर सवार साँवले सपनों का एक हुजूम मौत की खामोश वादी की तरफ़ अग्रसर है। कोई । रोक-टोक सके, कहाँ संभव है। इस हुजूम में आगे-आगे चल रहे हैं, सालिम अली। अपने कंधों पर, सैलानियों की तरह अपने अंतहीन सफ़र का बोझ उठाए। लेकिन यह सफ़र पिछले तमाम सफ़रों से भिन्न है। भीड़-भाड़ की जिंदगी और तनाव के माहौल से सालिम अली का यह आखिरी पलायन है। अब तो वो उस वन-पक्षी की तरह प्रकृति में विलीन हो रहे हैं, जो जिंदगी का आखिरी गीत गाने के बाद मौत की गोद में जा बसा हो। कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने । सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा। मुझे नहीं लगता, कोई इस सोए हुए पक्षी को जगाना चाहेगा। वर्षों पूर्व, खुद सालिम अली ने कहा था कि लोग पक्षियों को आदमी की नज़र से देखना चाहते हैं। यह उनकी भूल है, ठीक उसी तरह, जैसे जंगलों और पहाड़ों, झरनों और आवशारों को वो प्रकृति की नज़र से नहीं, आदमी की नजर से देखने को । उत्सुक रहते हैं। भला कोई आदमी अपने कानों से पक्षियों की आवाज़ का मधुर संगीत सुनकर अपने भीतर रोमांच का सोता फूटता महसूस कर सकता है?

प्रश्न

(क) सालिग अली किसकी तरह प्रकृति में विलीन हो रहे हैं?

(ख) सालिम अली पक्षियों को किन नजरों से देखना चाहते थे?

(ग) मनुष्य पक्षियों की मधुर आवाज सुनकर रोमांच अनुभव क्यों नहीं कर सकता?

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

2. पता नहीं, इतिहास में कब कृष्ण ने वृंदावन में रासलीला रची थी और शौख गोपियों को अपनी शरारत का निशाना बनाया। था। कब माखन भरे भाँडे फोड़े थे और दूध-छाली से अपने मुँह भरे थे। कब वाटिका में, छोटे-छोटे किंतु घने पेड़ों की छाँह।। में विश्राम किया था। कब दिल की धड़कनों को एकदम से । तेज करने वाले अंदाज़ में बंसी बजाई थी। और, पता नहीं, कब वृंदावन की पूरी दुनिया संगीतमय हो गई थी। पता नहीं, यह सब कब हुआ था। लेकिन कोई आज भी वृंदावन जाए तो नदी का सॉवला पानी उसे पूरे घटनाक्रम की याद दिला। देगा। हर सुबह, सुरज निकलने से पहले, जब पतली गलियों से उत्साह भरी भीड़ नदी की ओर बढ़ती है, तो लगता है। जैसे उस भीड़ को चीरकर अचानक कोई सामने आएगा और बंसी की आवाज़ पर सब किसी के कदम थम जाएँगे। हर शाम सूरज ढलने से पहले, जब वाटिका का | माली । सैलानियों को हिदायत देगा तो लगता है जैसे बस कुछ ही क्षणों में वो कहीं। से आ टपकेगा और संगीत का जादू वाटिका के भरे-पूरे माहौल पर छा जाएगा।। वृंदावन कभी कृष्ण की बाँसुरी के जादू से खाली हुआ है क्या!

प्रश्न

(क) वृंदावन में सुबह-शाम क्या अनुभूति होती है?

(ख) यमुना नदी का साँवला पानी किस घटनाक्रम की याद दिलाता है।

(ग) वृंदावन किसकी जादू से खाली क्यों नहीं होता?